



सामान्य अध्ययन

निर्धारित समय: 1 घंटा 30 मिनट
Time allowed: 1 Hour 30 Minutes

अधिकतम अंक: 125
Maximum Marks: 125

Name: Rojnish Patel

Mobile Number: _____

Medium (English/Hindi): _____

Email: _____

Center & Date: _____

UPSC Roll No.: _____

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

उत्तर-पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

All the questions are compulsory.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Answer Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Answer Booklet must be clearly struck off.

केवल मूल्यांकनकर्ता द्वारा भरा जाए (To be filled by Evaluator only)

Question Number	Marks
1.	
2.	
3.	
4.	
5.	
6.	
7.	
8.	
9.	
10.	
Grand Total (सकल योग)	

मूल्यांकनकर्ता (हस्ताक्षर)

Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्ता (हस्ताक्षर)

Reviewer (Signature)

Feedback

- | | |
|---|--|
| 1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता) | 2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता) |
| 3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता) | 4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह) |
| 5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता) | 6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता) |

1.

अहाँ सादगी नहीं, वहाँ महानता नहीं।

Where there is no simplicity, there is no greatness.

20वीं शताब्दी की शुरुआत में, जब लोग भारत की आजादी के लिए अपने-अपने स्तर पर प्रयासरत थे, बंगाल में एक प्रतिक्रियावादी विचारधारा का उदय हुआ। यह युवाओं का एक समूह था जिसका मानना था कि सभ्यता के दौड़ में भारत के पिछड़ने के कारण यह गुलामी की दशा खोल रहा है। इन युवाओं ने सभ्यता में स्वयं को अंग्रेजों के समान स्थापित करने के प्रयास में

मौस्य भ्रष्टाण प्रारंभ कर दिया, शराब पीने लगे, अंग्रेजों की तरह अंग्रेजी बोलने का प्रयास करने लगे। किंतु इससे न तो भारत अधिक सम्यक् हुआ, न आजाद हुआ और न ही वे लोग इतिहास में महान कहलाए, क्योंकि महानता कोई विलासिता से मिलने वाली वस्तु नहीं है। वहीं उनके विपरीत सादा जीवन उच्च विचार के जीवन मूल्य को अपनाने वाले महात्मा गांधी स्वतंत्रता संघर्ष के सबसे बड़े नायक एवं सदी के महान्तम व्यक्ति बने।

अब आगे बढ़ने से पहले 'सादगी' पर विचार करते हैं। आखिर किसे सादगीपूर्ण जीवन माना जाय

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिखना
चाहिये।

(Candidate must not
write on this margin)

और किसे विलासिता की संज्ञा दी जाय? वस्तुतः सादगी का ~~विचार~~ निर्धारण व्यक्ति के रहन-सहन, खान-पान, बोल-चाल, एवं पहनावा आदि के मूल्यांकन से होता है। यदि कोई व्यक्ति न्यूनतम जरूरतों में सहजता के साथ अपना जीवन यापन कर रहा है तो वह सादा जीवन कहलाता है, वहीं इसके विपरीत फैशनपरस्त, शान-शोकत से युक्त खर्चीला जीवन विलासिता कहलाता है।

उपर्युक्त विभेद तो केवल बाहरी स्तर के मूल्यांकन पर है, वस्तुतः सादगीपूर्ण जीवन का एक हिस्सा सादा विचारों से भी संबंधित है। आप के विचारों की सहजता स्वामाविष्ठा से भी

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिखना
चाहिये।

(Candidate must not
write on this margin)

2.

आपकी सादगी का निदर्शन होता है। मान लीजिए कोई खान-पान, रहन-सहन एवं पहनावे से सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति लगे किंतु उसके विचार एवं कार्य धन केंद्रित, लाभ केंद्रित एवं उछल-पुछल मचाने वाले हों तो वह व्यक्ति विलासी ही कहे जाने योग्य है।

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिखना
चाहिये।
(Candidate must not
write on this margin)

अब अगला महत्वपूर्ण शब्द है-
'महानता'। मेरे विचार से महान वह है जिसके विचार महान हैं, जिसके कार्यों से बड़ा सकारात्मक परिवर्तन हुआ है, जिसका जीवनपथ अनुकरण करने के योग्य है। जैसे इतिहास में तो अनेक लोगों के नाम के पहले इस विशेषण को जोड़ा जाता रहा है किन्तु

6

आधुनिक पैमानों पर महात्मा गांधी, मुंशी प्रेमचंद, कबीरदास, नेल्सन मंडेला एवं मदर टेरेसा को महान कहा जाना चाहिए। महात्मा गांधी महान नेता थे, कबीर महान समाज सुधारक, प्रेमचंद महान लेखक एवं मदर टेरेसा महान समाज सेवी थीं। गांधी ने देश की राजनीति को नया आयाम दिया तो प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य की दिशा एवं दशा बदल कर रख दी, इसी तरह कबीर, मंडेला एवं मदर टेरेसा ने भी अपने-अपने क्षेत्रों में व्यापक सकारात्मक परिवर्तन किए।

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिखना
चाहिये।
(Candidate must not
write on this margin)

अब बात सादगी एवं महानता के बीच संबंध की करते हैं। क्या सादगी के बिना महान होना संभव

7

नहीं है ? अगर ऐसा है तो फिर सादगी के बिना महानता को क्यों हासिल नहीं किया जा सकता है ? उपर्युक्त सवालों का जवाब यदि इतिहास में खंगालने का प्रयास करें तो स्पष्ट हो जाता है कि विलासियों का जीवन उन्हें पतनावस्था की ओर ले गया है महानता की तरफ नहीं। राजे- राजवाड़े अपनी विलासिता के चलते ही उजड़ गए। मुगल साम्राज्य जैसे वैभवशाली साम्राज्य को भी विलासिता के सींगुर ने खोखला कर दिया और वह अन्त में भरभराकर गिर गया।

आखिर विलासिता में ऐसा क्या है जो यह महानता में बाधक नजर आने लगती है ? वस्तुतः जो विलासी

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिखना
चाहिये।
(Candidate must not
write on this margin)

3.

हैं वह अनुशासित नहीं हो सकता, वह एकाग्रचित्त नहीं हो सकता, वह अपनी पूरी ऊर्जा एवं सामर्थ्य अपने महत्वपूर्ण उद्देश्यों पर नहीं लगा सकता और इसीलिए वह महान नहीं हो सकता है।

अब बात करते हैं कि किस तरह सादगी से महानता को प्राप्त करने में मदद मिलती है। वस्तुतः सादगी से व्यक्ति में सहजता आती है, उसमें आत्मविश्वास आता है, वह स्वयं के व्यक्तित्व को स्वीकार पाता है। कबीर की महानता के पीछे सबसे बड़ा कारक उनके आत्मविश्वास को माना जाता है और उनके आत्मविश्वास में महत्वपूर्ण योगदान उनकी सादगी

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिखना
चाहिये।
(Candidate must not
write on this margin)

एवं सहजता का धारा

"हम घर जारा अपना खिया मुराड़ा दाय
अब घर जारों तासु का जो चले हमारे सथा।"

इसी तरह जब हम महान कवियों एवं लेखकों की बात करते हैं तो उनकी सादगी उनके शैली में दिखती है। भारत के दो महान साहित्यकार तुलसीदास एवं प्रेमचंद हुए, ~~उसमें~~ उनकी भाषायी सादगी का महत्वपूर्ण योगदान था जिसने उनके साहित्य को सहज एवं संप्रेक्षणीय बनाया। तुलसीदास लिखते हैं—

"का भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिए सौच
काम जु आवे कामरी काले करिए कुमाय।"

उपर्युक्त दोहा न सिर्फ भाषा

के संदर्भ में प्रासंगिक है बल्कि जीवन के अन्य संदर्भों हेतु भी महत्वपूर्ण संकेत देता है। उदाहरण के लिए यदि हमारा काम दो जोड़ी कपड़े, चार कमरे के घर और कम कीमत की गाड़ी से चल सकता है तो फिर एकड़ों जोड़ी कपड़े, कई एकड़ में फैली कोठी एवं मर्सिडीज एवं बीएमडब्ल्यू जैसी गाड़ियों की क्या आवश्यकता है ?

यहीं पर एक और सवाल पर विचार करना उचित है कि क्या केवल सादगीपूर्ण जीवन से ही महानता के आदर्श को प्राप्त किया जा सकता है ?
जवाब है - नहीं। क्योंकि सादगीपूर्ण

4.

जीवन महानता की एक शर्त है न कि एकमात्र शर्त। सादगी के साथ-साथ आप में नेतृत्व कौशल, वैचारिक तेजस्विता, सम्राज्यत्मक ऊर्जा एवं उद्देश्य का होना भी जरूरी है। विवेकानन्द केवल भगवा धारण कर लेने से ही महान नहीं हुए बल्कि उनके विचार, व्यवहार, ~~उद्देश्य~~ और अन्तर्-चीजें भी महान थीं।

अब अन्त में इस सवाल पर भी सोच लेते हैं कि क्या बिना सादगी के भी कोई महान बना है या बन सकता है? ~~यह ही वास्तव~~ इतिहास में उदाहरण तो मिलते हैं राजाओं-महाराजाओं के जो सादगीपूर्ण

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

12

जीवन न जीते हुए भी महान कहलाए जैसे - अकबर, अशोक, महाराणा प्रताप आदि। ये सब राजा थे ऐसे में सादगीपूर्ण जीवन तो क्या ही जीते रहे होंगे किंतु वर्तमान संदर्भ में परिस्थितियाँ बिल्कुल अलग हैं, तब से आज के मानदंड भी अलग हैं ऐसे में आज राजाओं जैसे वैभव विलास के साथ यदि कोई महान बनने की आकांक्षा रखता है तो यह उसी मिथ्या चेतना कहलाएगी। आजकल तो पैमाने अलग हैं और उन पैमानों को आधार बनाकर गढ़े मुहावरे भी अलग हैं जैसे अंग्रेजी का यह मुहावरा -

'The style is man himself'
-----x-----x-----
(आपसी जो स्टाइल है वही आप हैं)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

13

यदि आपका जीवन विलासी है तो
फिर आप महान कैसे हो सकते हैं?

— * * * —

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिखना
चाहिये।
(Candidate must not
write on this margin)

5.

"जीवन में दो तासदियाँ हैं। एक अपने दिल की
छ्वाहिश न चाने की : दूसरी चाने की।"

"हजारों छ्वाहिशें ऐसी कि हर छ्वाहिश पे दम निकले,
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले।"

गालिब का यह शेर जीवन
की अनंत महत्वाकांक्षाओं एवं उन
महात्वाकांक्षाओं की अपूर्णता से उपजे
अधुरेपन एवं तासद स्थिति को बड़ी
मार्मिकता से व्यक्त करता है। वस्तुतः
मनुष्य जो प्राप्त करना चाहता है और
जो उसे उपलब्ध होता है, में दूरी
बनी रहती है और इसी दूरी को

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिखना
चाहिये।
(Candidate must not
write on this margin)

पाने के प्रयास में मनुष्य अपना पूरा जीवन गुजार देता है। मान लीजिए कि किसी की सारी महत्वाकांक्षाएँ पूरी हो ~~जाती~~ जाती हैं, उसे वह सब कुछ

मिल जाता है जिसे वह प्राप्त करना चाहता है, तो फिर वहीं उसके जीवन के उद्देश्यों की समाप्ति हो जाती है और निरुद्देश्य जीवन को मृत्यु से भी बढ़तर माना गया है। इस तरह यह ~~अर्थ~~ कथन कि 'जीवन में दो तासदियाँ हैं। एक अपने दिल की ध्वादिश न पाने की दूसरी, पाने की।' सर्वथा उचित प्रतीत होता है।

वस्तुतः मनुष्य की ~~दृष्टि~~ महत्वाकांक्षाओं के चलते ही कुछ विज्ञानों

ने घोषणा कर दी कि 'मनुष्य मूलतः एक स्वार्थी प्राणी है।' स्वार्थी है या नहीं है यह तो अलग विषय है किंतु इन्हीं महत्वाकांक्षाओं से मानव जीवन संचालित होता है, यह सत्य है। शुरुआत एक बच्चे के जन्म से करते हैं, कहने को तो उसकी कोई महत्वाकांक्षा या 'दिली ध्वादिश' नहीं होती किंतु भूख लगने पर, दर्द होने पर या अन्य कोई शारीरिक तकलीफ होने पर वह रोता है। इस तरह कह सकते हैं कि एक बच्चे की दिली ध्वादिश अपना पेट भरने तक सीमित होती है, जैसे- जैसे वह बड़ा होता है, उसी दिली ध्वादिश बढ़ती जाती है, स्कूल जाने पर अच्छे अंक लाने, कक्षा में प्रथम स्थान पाने, बड़े- बड़े खेलों में

6.

जैसी टेरों आकांक्षाएँ उसकी दिली
छ्वादिश बन जाती हैं। स्वाभाविक
हैं कि सभी की पूर्ति हो पाना
संभव नहीं है और इसी अपूर्णता से
दुःख की उसके जीवन में उत्पत्ति होती
है।

यही बच्चा जब युवक बनता है
तब फिर इसकी 'दिली छ्वादिशों' एक
बार व्यापक परिवर्तन से गुजरती हैं।
अब इसको अच्छी आर्थिक-सामाजिक
स्थिति से ऐंक्छ छ्वादिशों परेशान
करती हैं। कोई कहता है कि उसकी
दिली छ्वादिश मर्सिडीज खरीदना
है तो किसी की दिली इच्छा
एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में बड़ा अधिकारी
बनने की।

18

'दिली छ्वादिशों' को सपने
की संज्ञा दे सकते हैं, ऐसा सपना
जो एक बार सच साबित हो जाए तो
~~अपनी~~ जगह किसी नए सपने
का निर्माण कर जाता है फिर एकबार
मनुष्य इस नए सपने को सच बनाने
के उद्यम में पूरी तरह से खुद को
झोंक देता है और इसी तरह यह
चक्र चलता रहता है। इसी चक्रीयता
से मनुष्य में निरर्धस्त्राबोध पैदा होता है,
उसकी दिली छ्वादिशों के न पूरे होने से
उसको जीवन के बेकार गुजर जाने
का ह्योभ स्ताने लगता है जिसे हिंदी
के किसी कवि ने इस तरह बस्तुतः बिया है।

"जीवन एक फटे चीथड़े की तरह है जिसे मैं जीता हूँ
यह फटता जाता है ज्यों ज्यों इसे सीता हूँ।"

19

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिखना
चाहिये।(Candidate must not
write on this margin)उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिखना
चाहिये।(Candidate must not
write on this margin)

मनुष्य जब जीवन के उत्तरार्ध में प्रवेश करता है तो उसका निर्धनता-बोध कम होने की बजाय बढ़ता ही जाता है क्योंकि समय के साथ वह स्वयं को महत्वाकांक्षाओं के बोझ से बोझिला चला गया था और जितनी ज्यादा महत्वाकांक्षाएँ हैं उतनी ही अपूर्णताएँ होंगी अतः दुःख की तीव्रता भी अधिक होगी। इस उम्र में तो वह अवसाद जैसी स्थिति में पहुँच जाता है फिर इन्हीं में से एक लिखता है -

"वह बिंदगी दो उगलियों के बीच में दबी सस्ती सिगरेट की तरह है जिसे थोड़ी देर में पीकर सड़क पर फेंक देंगे।"

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिखना
चाहिये।
(Candidate must not
write on this margin)

7.

अब बात उनकी करते हैं जिन्हीं सारी दिली इच्छाओं पूरी हो चुकी हैं। जैसे तो विरले ही कोई व्यक्ति होगा जिसकी जीवन की सब जरूरतें, सारी इच्छाएँ पूरी हो चुकी हों, उसे कुछ पाने की जरूरत न बची हो, कुछ खोने का डर न रह गया हो। फिर भी एक पल को यदि मान लें कि ऐसे विचित्र जीव भी इस धरा पर हैं तो इस दिलचस्प जीवनदशा पर गौर करना तो कतता है।

वह मनुष्य जिसको अब कुछ पाने की जरूरत नहीं वह रात को सोते समय आने वाले दिन की क्या तैयारी करेगा, और आने वाले दिन का उसको इंतजार भी क्यों होगा, वह तो बस उसी वर्तमान में मस्त

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिखना
चाहिये।
(Candidate must not
write on this margin)

रहना चाहेगा किंतु जीवन की घड़ी तो ठहर नहीं सकती, समय तो आगे बढ़ेगा। ऐसी स्थिति में इस निरुद्देश्य मनुष्य को दिन होने, रात होने, परिवर्तन होने या न होने से फर्क पड़ना बंद हो जाएगा। एक तरह वह समाधि पुरुष की अवस्था प्राप्त कर लेगा, किंतु यह जीवन तो ७ महत्वाकांक्षाओं के पीछे भागते मनुष्य के जीवन से भी बफर है, आखिर कोई निरुद्देश्य कैसे जी सकता है और कब तक ऐसे जी सकता है!

अब मनुष्यों से दृष्टक थोड़ा अन्य जीव जन्तुओं की भी बात कर

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिखना
चाहिये।
(Candidate must not
write on this margin)

लेते हैं क्योंकि जीवन तो उनका भी होता है, उनमें भी दिल और दिमाग भी होता है तो स्वाभाविक है कि 'दिली क्वाडिसें' भी होती होंगी। हालांकि इनकी दिली क्वाडिसें मनुष्यों जैसी जटिल एवं व्यापक नहीं होती। इनकी अकांक्षाएँ क्षुब्धा तृप्ति, सुरक्षित आवास और साथी के साथ सहवास से आगे शायद ही बढ़ती हों किंतु इनकी भी पूर्ति करना इनके जीवन का एक कठिन उद्देश्य ही होता है। यह कठिनता आज के दौर में तो और बढ़ गयी है जब मनुष्य ने प्रकृति पर अपना दबदबा बना लिया है।

कुछ जानकर ऐसी भी स्थिति में पहुँच जाते हैं जहाँ उनको भूख लगना बंद हो जाता है, वे निष्क्रिय

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिखना
चाहिये।
(Candidate must not
write on this margin)

8.

पड़े रहते हैं और अंत में मर जाते हैं। वस्तुतः ऐसा उनमें किसी विशिष्ट रोग के चलते होता है।

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिखना
चाहिये।
(Candidate must not
write on this margin)

तो फिर अभी तक की बातों से क्या मान लें कि मानव जीवन ही लासदी है? वस्तुतः लासदी तो पता नहीं किंतु मानव जीवन में दुःख उतना ही स्वाभाविक एवं निरंतर है जितना कोई अन्य भाव। फिर भी मनुष्य को याद अपने जीवन की लासदी को कम अथवा सीमित करना है तो उसे 'दिली स्वाद्विशों' के चोले में आने वाली महत्वाकांक्षाओं को सीमित करना होगा।

'करतब करिए सोच विचारके जेते अपनी ठौर तेते पाँव पसारिए जितनी लांबी होर ।'

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिखना
चाहिये।
(Candidate must not
write on this margin)